संयोग बस वैद्यनाथ धाम मे ई लोकनि एहि पंडाक ओतय डेरा रखलनि जतय सुन्दर रहैत छला। वैद्यनाथ ~~धाम~~ बाबाक पूजाक समय बहुत भिड़-भाड़ छल, सरला ओहि भिड़ मे खसि पड़ली तहि कालमे सुन्दर, सरला के रक्षा कएथ बचौलनि ओहि काल मे सुन्दर सरला के चिन्हलथिन मुदा संकामे छल ओकर बाद सुन्दर के देखऽ सामने बोभिकाल आ सरला दिस ~~तमकि~~ ताक लगलथिन, एहि क्रम मे सुन्दर बुझि गेलथिन जे ई हमर पत्नी सरला थिक। सरला सेहो ओहि पुरुष पर आकर्षित भं गेली आ दुनु मे मीलन भेल ओकर बाद सुन्दर आ सरला संग आबैत आछि।

एहि तरहे प० जीवन आ ओही अवसरके सरला मनः स्थिति के एहि प्रकारे व्यंग कयने छथि से दुखु —

"एहि पुरुष कँ देखि हमर देह कपैय किए? हे बैद्यनाथ! ए तरहे दुःखिनी कँ किए सतबै छहक? ने एहि ठाम सँ जा होइए ने बैसने थीर रहि सकैछी। हमर आँखि एहि मुहचाँद लै चकोर भेल अछि, हे बैद्यनाथ!"

सरला माय-पितियान, संगी-साथी, आ सहेली मे गप सप चलय लागल जे ई पुरुष नाथ: सुन्दर, सरलाक पति थिका। सरला सेहो अनुमान क लेलिह जे ई किएआन नहि, हमर विवाहित पति थिका। कुछ कालक बाद मेल-मिलाप होयत आछि, परिचय पात होयत आछि, आ खुशी होयत आछि। संयोग बस सुन्दर सरलाक मिलन होय आछि। ~~संयोग~~ सरलाक अपन माय संग गाम आबैत आछि। ओमहर सुन्दर अपन गाम जाबि आनि अपन सासुर आबैत छैत। सुंदर आ सरला आनन्द सुखक जीवन बीताब लगैत आछि।

" नगर-नारी चलालि परिछय पुरुष लक्षण रूप।
चिर करायि हिय अजिर- चत्वर उपयमन-मख भूप रे।
कतय छथि कई छबि अक्षत कतय [illegible] भूप रे ।।

डी.बी. कॉलेज जयनगर
नाम - मो० मुन्ना
सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग, BA-P-II

सुन्दर संयोग.

दिनांक-

आधुनिक युग मे मैथिली नाटकक सूत्रधार केनिहार पं. जीवन झा छथि। हे आधुनिक मैथिली नाटकक जनक कहल जायत छथि। हिनका सँ पहिने अर्थात मध्यकाल मे नाटकक रचना भेल तकर प्रो० रमानाथ झा नाम कहलैन आछि। जीवन झा मैथिली नाटक के संस्कृत नाटक साँचा पर रचलैनि, किन्तु रंग रूप स्वतंत्र रूपसँ प्रस्तुत कैलेन अछि। नव विषय वस्तु के लऽक आकर्षक भाषा मे आ विशिष्ट चरित्रक माध्यम सँ अपन नाटक प्रस्तुत कैलनि अछि।

'सुन्दर संयोग' नाटकक रचना पं० जीवन झा 1904 ई० मे कैलैनि ई सुखद अंत के समाजिक नाटक थिक, जाहि मे संयोग के महत्वपूर्ण स्थान देल गेल अछि। एहि नाटकक नायक सुन्दर आ नायिका सरला थिक। ई नाटक चारि गोट अंक मे विभक्त अछि। थियेटरक प्रभाव कारणे गीतक बाहुल्य अछि। एहि मे कुल 24 गोट गीत अछि। कथोप-कथन छोट, रोचक सरल एवं हृदय ग्राहि अछि। पात्रक चरित्र पर पुर्ण रूपेण प्रकाश नहि पड़ैत छथि।

एकर कथा वस्तु सुन्दर नामक एक मैथिल युवक सरला नामक युवति सँ सम्बन्धित अछि। सुन्दरक विवाह सरला नामक युवति सँ संग होयत अछि। ई विवाह मिथिलाक रिती-रिवाज अनुकूल होयत अछि, चतुर्थिक राति मे सुन्दर कोनो कारण बस अपन पतनी सरला के छोड़ी भागि गेलाह। भोरे आंगन मे एवं टोल मे हहाकार मचि गेल। सरलाक माय छाति पिटै लागलिह, सरला दुखिया जका जीवन-यापन बिताब लागलि। सुन्दर भागि के बैधनाथ धाम चलि गेल। बैधनाथ धाम मे पुजा-पाठ करबा लागलाह।

कालक्रमे डेढ़ वर्षक बाद बाद सरला अपन माय-पितियान आ संगी-सहेली संग बैधनाथ धाम गेलिह।

एहि नाटक मात्र एक उद्देश्य अछि, सरस गीतकेँ एहि नाटकीय प्रदर्शन द्वारा जन समूह के अनुमोदित करबाक एहि नाटक द्वारा देखाओल गेल अछि। देखल जाए एकटा सरस गीत —

" अधर-अपर नासा उन्नत, कुच भास सुआयत आँखि।
से जनु पक्व बिम्ब रस पीबत शुक बसइछ.
.... नीअ पाखि ॥
देखि बदन बिधु एहन के जग न होयत अभिलाखि।
समय सरल बरिनत रखाल सन मानि तहि लिए चाखि॥

मो० मुन्ना
मैथिली विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर
मधुबनी.
ल० ना० मि० वि०, दरभंगा.
मो० - 9931488030
Email- munnamd624@gmail.com